ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 218-222
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

उच्च शिक्षा : क्षमता व गुणवत्ता के नये प्रयास एवं सम्भावनाऐं (उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में)

1. आनन्द प्रकाश सिंह 2. चन्द्रा गोस्वामी

1. प्रोफेसर एवं विभाग प्रभारी, 2. शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग, एम.बी.जी.पी.जी. कालेज, नैनीताल (उत्तराखण्ड) भारत

Received- 17.12.2019, Revised- 22.12.2019, Accepted - 26.12.2019 E-mail: apsingh009@gmail.com

सारांश : *देश तथा समाज के लिए कुशल, सुयोग्य, समर्पित और उपयोगी नागरिकों का निर्माण करने में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मानव व्यक्तित्व के विकास, जीवन में प्रगति की सही दिशा, समग्र राष्ट्रीय विकास, सभ्यता एवं संस्कृति के विकास तथा सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावी माध्यम माना गया है। शिक्षा मनुष्य में पहले से उपस्थित पूर्णता की अभिव्यक्ति है, जो मनुष्य को सांसारिक जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाती है। शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है, क्यों कि शिक्षा ही सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण में सहायक होती है और मानव को अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ बनाती है। किसी देश की स्थिति ही उसके विकास की स्थिति को प्रकट करती है। भारत को यदि आर्थिक व वैज्ञानिक प्रगति करनी है, लोगो का जीवन–स्तर ऊंचा उठाना है, अन्धविश्वासों एवं अज्ञानता से मुक्ति पानी है और अपना सर्वांगीण विकास करना है, तो उसे देश में शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार करना होगा। जो महत्व शरीर के लिए भोजन का है, वही शिक्षा का सामाजिक जीवन के लिए है। महात्मा गांधी कहतेहै कि "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे के शरीर, मन और आत्मा में विद्यमान सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास करना है। "प्राचीन भारतीय वैदिक काल में शिक्षा को पुस्तकीय ज्ञान के पर्यायवाची एवं जीविकोपार्जन के साधन के रुप में वह प्रकाश माना गया, जो बालक का सर्वागीण विकास करने, उत्तम जीवनयापन करने में योगदान करती है अर्थात् शिक्षा मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। अल्टेकर के शब्दों में कहा जा सकता है कि– "वैदिक काल से आधुनिक काल तक शिक्षा के विषय में भारतीयों की मुख्य धारणा यही रही है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ–प्रदर्शन करता है।"*

कुंजी शब्द– कुशल, सुयोग्य, समर्पित, मानव व्यक्तित्व, विकास, सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक, पुनर्निर्माण।

15 अगस्त 1947 ई0 में स्वतंत्रता के पश्चात् उच्च शिक्षा प्रणाली में विशेष परिवर्तन नहीं किया गया क्योंकि उस समय देश के सम्मुख बेकारी, भुखमरी, बटवारे के कारण शरणार्थियों की समस्याएँ, आर्थिक विकास करना मुख्य समस्याएँ थीं। उच्च शिक्षा के विकास में राधाकृष्णन् कमेटी, जाकिर हुसैन समिति तथा कोठारी कमीशन का स्वतंत्रता पश्चात् प्रमुख योगदान है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों को अनुदान देने तथा नीति नियन्त्रण हेतु किया गया था। उच्च शिक्षा का अर्थ है–सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विषेश विषय या विषयों में विषेश, विषद तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यवसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो प्रायः ऐच्छिक होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक एवं व्यवसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं।

भारत की वर्तमान शिक्षा पद्धति ने बच्चों का समाजीकरण करने के बजाय शिक्षा का व्यापारीकरण कर दिया है। अन्य देशों के मुकाबले भारत में आज भी लगभग 12.9 प्रतिशत् लोगों को ही उच्च शिक्षा प्राप्त हो पा रही है। उसमें भी क्षमता एवं गुणवत्तापरक शिक्षा की बात करना व्यवहारिक नहीं हो पा रहा है। हमारे विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान क्षमता एवं गुणवत्ता के स्तर पर विश्वस्तरीय संस्थानों में स्थान पाने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं। वर्ष 2020 तक 20 प्रतिशत् व्यक्तियों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने का उद्देश्य रखा गया है। वर्तमान में देश उच्च शिक्षा पर तकरीबन 46 हजार 200 करोड़ रूपये खर्च किये जा रहे हैं। वर्ष 2020 तक यह खर्च1 लाख 55 करोड़ रूपये तक पहुँचने की सम्भावना है। एक प्रगतिशील समाज वही हो सकता है, जहॉ शिक्षा उद्देश्यपूर्ण हो, जो देशभक्ति की भावना जाग्रत करे सच्चरित्र नागरिक बनाए, जो देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करें। एक स्थिर समाज में शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी को सांस्कृतिक व बौद्धिक विरासत हस्तान्तरित करना है। शिक्षा नवीन मूल्यों एवं विचारों को आंतरीकृत करवाकर लोगो को किसी विशिष्ट दिशा में विकास हेतु बौद्धिक एवं भावात्मक रुप से तैयार करती है, ताकि वे विकास प्रक्रिया में सहयोग करे।

शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए शैक्षिक

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

तकनीकी का एक उपकरण वर्तमान शिक्षा जगत् में अपनी विषेश भूमिका का निर्वाह कर रहा है, वह साधन है–डिजीटल लाइब्रेरी। डिजीटल लाइब्रेरी को बहुभाषी लाइब्रेरी, इलैक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी, ऑनलाइन लाइब्रेरी, डेस्कटॉप लाइब्रेरी तथा वर्चुअल लाइब्रेरी आदि नामों से भी जाना जाता है। इसमें सूचना से सम्बन्धित कार्य जैसे सूचना को डिजीटल करना, संग्रहण करना, खोज करना, जोड़ना, उपयोग करना, प्रकाषित करना तथा उनमें साझेदारी करना आदि कार्य सम्पन्न किये जाते हैं। इससे नेटवर्किंग के माध्यम से कभी भी संसाधनों का अधिगम प्राप्त किया जा सकता है। भारत में पहला डिजीटल ग्रन्थालय बंगलौर में स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान ने प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान बंगलौर एवं मस्तिष्क विज्ञान संस्थान आादि ने भी इस दिशा में कार्य किये हैं। शैक्षिक तकनीकी के एक भाग 'अभिकमित अधिगम' के विकास हेतु इण्डिया एसोशिएषन फॉर प्रोग्रामड् लर्निंग की स्थापना सन् 1966 ई. में की गई। वर्तमान में इसका नाम बदलकर इण्डिया एसोशिएषन फॉर एजुकेशनल टैक्नोलॉजी कर दिया गया है। यह संस्थान अनेक पत्रिकाओं, पुस्तकों, समाचार पत्रों, सेमीनार सिम्पोजियम आदि के माध्यम से अपने क्षेत्र में बेहतर कार्य कर रहा है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, स्टेट इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों में इस क्षेत्र में शोध सम्पूर्णता के साथ किया जा रहा है। वर्तमान समय में इस बात की आवश्यकता महसूस की जा रही है कि प्रशिक्षण कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाये जाऍं। सैद्धान्तिक एवं अनुपयोगी ज्ञान को निकालकर व्यवहारिक विषयवस्तु को प्रयोग में लाया जाए। अधिकतर विश्वविद्यालयों ने अपनी बी.एड., एम.एड., एम. फिल. आदि पाठ्यक्रमों में शैक्षिक तकनीकी का समावेश किया है।

अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक तकनीकी की लोकप्रियता के कारण वीडियो टेप शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत अथवा कक्षा–कक्ष एवं अध्ययन केन्द्रों के उपयोग हेतु उपलब्ध कराये जाते हैं। आज शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए भारत की कुछ संस्थाऍं विभिन्न स्तरों के लिए वीडियो टेप में शैक्षिक वीडियो पाठों का निर्माण करती हैं। केन्द्रीय शिक्षा संस्थान एवं राज्य शिक्षा संस्थान विद्यालय स्तर के वीडियो पाठ निर्मित करता है। राश्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षार्थियों के लिए वीडियो टेप में शैक्षिक वीडियो पाठों का निर्माण किया जा रहा है। यू0जी0सी0 विभिन्न विश्वविद्यालयों में संचालित ओडियो विज्युअल रिसर्च सेन्टर तथा एजुकेशनल मीडिया रिसर्च सेन्टर के द्वारा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के वीडियो पाठ तैयार करता है। इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा भी वीडियो पाठों का निर्माण किया जा रहा है।

1983 की नयी शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये। उच्च शिक्षा में शिक्षकों की भर्ती में जे.आर.एफ. या नेट या स्लेट को अनिवार्य रूप से स्वीकार किया गया। उच्च शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों तथा प्राचार्यों में सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों की स्थापना की गई। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का तात्पर्य है जिससे छात्रों में निहित क्षमता का पूर्ण विकास हो सके तथा उनमें सृजनात्मक क्षमता का विकास हो सके जो गुणवत्ता पर ही निर्भर करता है। 1995 में एन.ए.सी.सी. का गठन विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय में गुणवत्ता पर शिक्षण के परीक्षण के लिए किया गया। इसने कई मापदण्ड निर्धारित किये जैसे– विद्यार्थियों का स्तर, शिक्षकों की योग्यता, पाठ्यक्रम में प्रत्येक तीन वर्ष पश्चात् परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन, शिक्षण का उद्देश्य, शिक्षण को बोधगम्य बनाने के लिए साधन आदि का निर्धारण करना।

समानता, स्वतंत्रता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे उदारवादी मूल्य आधुनिक शिक्षा के केन्द्रीय तत्व रहे है। जिन्होने विषमता, सामाजिक वंचना और अन्य सभी प्रकार के भेदभावों के विरुद्ध चेतना को जाग्रत किया है, और लोगों को स्तरीकरण की बंद व्यवस्था को समाप्त करने हेतु अभिप्रेरित किया है साथ ही रोजगार के नए अवसरों का निर्माण करके सामाजिक गतिशीलता को आसान बनाया है। आज शिक्षा स्वयं में भी शक्ति का स्रोत तथा स्तरीकरण के आधार के रुप में महत्वपूर्ण बनी हुई है। आधुनिक शिक्षा ने विभिन्न व्यवस्थाओं के लिये उपयुक्त कौशल तथा प्रशिक्षण प्रदान करके युवाओं को विभिन्न पदो ंके लिए तैयार किया है और इस रुप में मानव संसाधन विकास द्वारा आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सहयोग दिया गया है।

शोध प्रारूप– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उत्तराखण्ड राज्य में उच्च शिक्षा की क्षमता एवं गुणवत्ता बढ़ाने हेतु नये प्रयासों एवं सम्भावनाओं के विषय में महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के विचार जानना है। प्रस्तुत अध्ययन में उसकी प्रकृति के अनुसार एवं अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को वर्णनात्मक रूप से प्रस्तुत करने हेतु वर्णात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य में उच्च शिक्षा की क्षमता एवं गुणवत्ता बढ़ाने हेतु बनाई गई नीतियों के विशय में है। जिस पर महाविद्यालय में अध्ययनरत्

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

छात्र–छात्राओं के विचार को जानने के लिए राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण (अल्मोड़ा) में अध्ययनरत्कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के 60 छात्र–छात्राओं का उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्ष पद्धति द्वारा निदर्षन के रूप में चयन किया गया है।

उद्देश्य –

– उच्च शिक्षा की क्षमता के विषय में महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के विचार जानना।

– उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु बनाई गई नीतियों के विषय महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के विचार जानना।

उपलब्धियाँ –

तालिका संख्या – 1

व्यक्तित्व विकास एवं समाजीकरण की प्रकिया में उच्च शिक्षा का महत्वका मूल्यांकन –

प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिषत्
अत्यधिक महत्व	42	70.00
आंशिक महत्व	18	30.00
कोई महत्व नहीं	00	00.00
कुल योग	60	100

तालिका संख्या–1 से स्पश्ट है कि उत्तरदाताओं में सबसे अधिक 70.00 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने यह माना है कि व्यक्तित्व विकास एवं समाजीकरण की प्रकिया में उच्च शिक्षा का अत्यधिक महत्व है, किसी भी छात्र–छात्रा नेइस महत्व को पूर्णतः अस्वीकार नहीं किया है। जबकि 30.00 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं का मानना है कि किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व विकास एवं समाजीकरण उसके जन्म से ही प्रारम्भ हो जाता है। परन्तु इस प्रकिया में उच्च शिक्षा के महत्व को नकारा भी नहीं जा सकता है।

तालिका संख्या – 2

आधुनिक उच्च शिक्षा से व्यक्ति कीपरिवार के परम्परागत् व्यवसायपर निर्भरता की स्थितिका मूल्यांकन–

प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिषत्
निर्भरता को कम किया है	55	91.67
निर्भरता को बढ़ाया है	00	00.00
कोई परिवर्तन नहीं	05	8.33
कुल योग	60	100

तालिका संख्या–2 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में सबसे अधिक 91.67 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने यह माना है कि आधुनिक शिक्षा नेयोग्यता के आधार पर रोजगार के नवीन अवसर प्रदान करके व्यक्ति की परिवार के परम्परागत् व्यवसाय पर से निर्भरता को कम किया है, किसी भी उत्तरदाता को यह नहीं लगता है कि आधुनिक शिक्षा से परिवार के परम्परागत् व्यवसाय पर निर्भरता बढ़ी है। जबकि 8.33 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं का मानना है कि इससे कोई भी परिवर्तन नहीं आया है।

तालिका संख्या – 3

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने एवं शिक्षण अधिगम की प्रकिया को सरल बनाने में शिक्षा तकनीकी की भूमिका का मूल्यांकन –

प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिषत्
हाँ	47	78.33
नहीं	03	5.00
तटस्थ	10	16.67
कुल योग	60	100

तालिका संख्या–3 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 78.33 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं का मानना है कि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने एवं शिक्षण अधिगम की प्रकिया को सरल और रोचक बनाने में शिक्षा तकनीकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, सबसे कम 5.00 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने माना है कि केवल शिक्षा तकनीकी का प्रयोग करने भर से गुणवत्ता में सुधार नहीं किया जा सकता है। जब तक कि यह हर किसी की पहुँच में ना हो। जबकि 16.67 प्रतिशत् छात्र–छात्रा इस विशय पर तटस्थ रहे हैं।

तालिका संख्या – 4

ओरिएन्टेशन एवं सेमिनार के माध्यम से शिक्षक की क्षमता और गुणवत्ता मे सुधार–

प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिषत्
सहमत	21	35.00
अर्द्धसहमत	31	51.67
टसहमत	08	13.33
कुल योग	60	100

तालिका संख्या–4 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 51.67 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं का मानना है कि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए ओरिएन्टेशन एवं सेमिनार के माध्यम से शिक्षक की क्षमता और गुणवत्ता मे सुधार किया जाना चाहिए। 35.00 प्रतिशत् छात्र–छात्रा इससे अर्द्धसहमत् हैं। जबकि 13.33 प्रतिशत् छात्र–छात्रा इससे असहमत हैं, उनके विचार से यदि ये ओरिएन्टेशन एवं सेमिनार व्यवहारिक न होकर केवल सैद्धान्तिक रह जाये तो इससे शिक्षकों की गुणवत्ता में कोई सुधार नहीं किया जा सकता है।

तालिका संख्या – 5

आधुनिक उच्च शिक्षा लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों पर आधारित –

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिषत्
हाँ	41	68.33
नहीं	00	00.00
कह नहीं सकते	19	31.67
कुल योग	60	100

तालिका संख्या–5 से स्पश्ट है कि उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 68.33 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने यह बात स्वीकार की है कि आधुनिक उच्च शिक्षा लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों पर आधारित है। किसी भी छात्र–छात्रा ने इस बात को अस्वीकार नहीं किया है। जबकि 31.67 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने इस विषय पर कोई उत्तर नहीं दिया है।

तालिका संख्या – 6
भूमण्डलीकरण की प्रकिया का उच्च शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव का मूल्यांकन –

प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिषत्
अत्यधिक	47	78.33
थोड़ा–बहुत	13	21.67
बिल्कुल नहीं	00	00
कुल योग	60	100

तालिका संख्या–6 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 78. 33 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने यह बात स्वीकार की है कि भूमण्डलीकरण की प्रकिया का उच्च शिक्षा व्यवस्था पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। उत्तरदाताओं में से किसी भी छात्र–छात्रा को यह नहीं लगता है कि भूमण्डलीकरण की प्रकिया का उच्च शिक्षा व्यवस्था पर बिल्कुल भी प्रभाव नहीं पड़ा है। जबकि 21.67 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने कहा है कि यदि उत्तराखण्ड राज्य की बात करें तो भूमण्डलीकरण की प्रकिया का उच्च शिक्षा व्यवस्था पर थोड़ा–बहुत प्रभाव पड़ा है। अभी भी इस दिशा में बहुत सम्भावनाएँ हैं।

तालिका संख्या – 7
उच्च शिक्षण संस्थानों में चलाये जाने वाले कैरियर काउन्सिलिंग एवं प्लेसमेंट सेल की उपयोगिता का मूल्यांकन –

प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिषत्
हाँ	49	81.67
नहीं	00	00.00
कोई उत्तर नहीं	11	18.33
कुल योग	60	100

तालिका संख्या–7 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में 81.67 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने यह बात स्वीकार की है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में चलाये जाने वाले कैरियर काउन्सिलिंग एवं प्लेसमेंट सेल छात्र–छात्राओं के लिए उपयोगी हैं। किसी भी छात्र–छात्रा ने इस बात को अस्वीकार नहीं किया है। जबकि 18.33 प्रतिशत् छात्र–छात्राओं ने कोई उत्तर नहीं दिया।

निष्कर्ष – उपरोक्त अध्ययन के पश्चात् निष्कर्षतः कहा जा सकता है किराष्ट्र एवं समाज की व्यापक उन्नति में उच्चशिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण है। व्यक्तित्व विकास एवं सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार एवं शिक्षा के साथ–साथ उच्च शिक्षा का विषेश महत्व है। आधुनिक शिक्षा ने जहाँ योग्यता के आधार पर रोजगार के नवीन अवसर प्रदान करके व्यक्ति की परिवार के परम्परागत व्यवसाय पर से निर्भरता को कम किया है, वहीं इसमें निहित मूल्यों ने विवाह एवं परिवार के अंतर्गत विद्यमान संबंधों की संरचना को स्वतंत्रता एवं समानता की दिशा में परिवर्तित किया है। साथ ही आधुनिक शिक्षा ने स्त्रियों को रोजगार प्रदान करके तथा उनकी पुरुषों पर निर्भरता को कम करके परिवार एवं समाज में उनकी प्रस्थिति को ऊँचा उठाया है। आधुनिक युग प्रौद्योगिकी का युग है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में भी शिक्षा तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और शिक्षण–अधिगम की प्रकिया को सरल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। शिक्षा के तीन बिन्दु शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम में सामंजस्य इसका उद्देश्य है। शिक्षक, जो कि क्षमता एवं गुणवत्ता विकास में महत्वपूर्ण संसाधन है, अपनी गुणवत्ता में सुधार ओरिएन्टेशन तथा सेमिनार के माध्यम से कर सकता है। उसका व्यक्तित्व, योग्यता तथा नवीन तथ्यों से जुड़ना गुणवत्ता में सुधार लाता है। उच्च शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हेतु जो नीतियाँ बनाई जाती हैं, यदि उनमें पारदर्शिता का आभाव हो जाए तो ये सभी प्रयास विफल हो जाने की भी आशंका रहती है।

भूमण्डलीकरण की प्रकिया के फलस्वरूप आये उदारीकरण के दौर में विकासशील देशों में शिक्षा की स्थिति में काफी बदलाव आया है तथा अब भी बदलाव की प्रकिया जारी है। भूमण्डलीकरण का शिक्षा व्यवस्था पर बहुआयामी प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण एवं किसी लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव हो सकती है जब शिक्षा के क्षेत्र में विद्यमान विषमता को दूर किया जाए और शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर सभी को उपलब्ध कराया जाए।यह सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग, शिक्षा व्यवस्था के उत्पादक आयाम और शोध तथा विकास की वर्तमान आवश्यकताओं के विशेष सन्दर्भों के साथ शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार के लिए सतत् दबाव बनाये हुए है।

अतः हम कह सकते हैं कि भारत में उच्च शिक्षा पुरातन काल से ही उच्च रही है। वर्तमान में जो कमियाँ आ गई हैं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

उन्हें दूर केवल दृढ़ इच्छा शक्ति, ईमानदारी तथा पूर्ण निष्ठा से उच्च शिक्षा से सम्बद्ध सभी के अपने कर्त्तव्य करने पर ही किया जा सकता है। शिक्षण संस्थाएँ कैरियर काउन्सिलिंग एवं प्लेसमेंट सेल के द्वारा छात्र–छात्राओं के मार्गदर्षन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। भारत में शिक्षा की गुणवत्ता को उच्च स्तर तक पहुॅचाने हेतु क्वालिटी एजुकेशन के रूप में ई–लर्निंग के महत्व को बढ़ाना होगा तथा शिक्षा के अधिकार की समुचित व्याख्या करनी होगी। लेकिन सर्वप्रथम आवश्यकता है भ्रष्टाचार का दमन कर एक ईमानदार कोशिश की, क्योंकि बिना ईमानदार राजनीतिक इच्छशक्ति के कोई भी महान लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है और यह एक लक्ष्य है जिससे हम अपनी आने वाली पीढ़ी को एक नवीन, उज्जवल, सभ्य एवं विकसित समाज प्रदान कर सकते हैं। जहॉ पर समता मूलक एवं न्यायपूर्ण समाज की स्थापना हो सकती है। उत्तराखण्ड में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सम्भावनाएॅ विद्यमान हैं। उत्तराखण्ड शासन इस प्रदेश को उच्चशिक्षा का हब बनाने का प्रयास कर रहा है। निकट भविष्य में इन प्रयासों का आने से देश के उच्च शिक्षा के माहौल में नया बदलाव और विकास देखने को मिलेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रुस्तगी, ए.के., 2013, 'समग्रता के अभाव में निष्प्रयोज्य है शिक्षा', समाज विज्ञान शोध पत्रिका, वोल्यूम–1 पृष्ठ 7–8
2. वर्मा, शालिनी एवं सिंह, पुष्पा, 2014, 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा शिक्षा में व्यापक परिवर्तन, कृतिका, वर्ष 7, अंक 13–14, पृष्ठ–112–114
3. व्यास, एस. एस., 2000, 'भारतीय शिक्षा नई दिशाएॅ, नए आयाम', पृष्ठ 35–42
4. भौमिक अभिजीत, 2000, 'शिक्षा, समाज और समाजशास्त्र', ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 108–120
5. श्रीवास्तव, डी. एस., 2003, 'भारत में शिक्षा का विकास', साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ 871–872
6. अग्निहोत्री, रवीन्द्र, 2011–12, भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्या, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 17–18
7. श्रीवास्तव, ब्रजेश, 2012, 'उच्च शिक्षा का गुणात्मक विकास', आदित्य पब्लिकेशन, बीना (म.प्र.), पृष्ठ 45–51
8. गुप्ता, एम॰एल॰, शर्मा डी॰डी॰, 2013, भारतीय सामाजिक समस्याऐं, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ संख्या 170–181
9. आजाद, जे0एल0. 'भूमण्डलीकरण का शिक्षा पर प्रभाव'. पूर्व सलाहकार शिक्षा प्रभाग योजना, भारत सरकार।
10. चौबे, सरयू प्रसाद. 2007. 'शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, पृष्ठ संख्या 281–285।
11. भटनाकर, सुरेश. 2010. 'शिक्षा मनोविज्ञान'. मेरठ बध्व आर. लाल बुक डिपो, निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज।

*****